आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received:31/05/2023; Accepted:03/06/2023; Published:24/06/2023

इलेक्ट्रानिक मिडीया और रोजगार

डॉ. रंजना पाटिल
हिंदी विभागाध्यक्ष
श्री चन्नबस्वेश्वर महाविध्यालय,
भालकी जि बीदर (५८५३२८)

डॉ. रंजना पाटिल,**इलेक्ट्रानिक मिडीया और रोजगार** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023, (281-285)

प्रस्तावना:- आज पूरा विश्व, "ग्लोबल विलेज अर्थात वैश्विक ग़ॉव " के रुप में सामने आ रहा है, ज्ञान और विज्ञान और उद्योग के क्षेत्र में पल पल नविनता है। भौतिक सुख सुविधाओं के दुनिया और भी गतिशील हुई है। सुचना क्रांति बाढ की तरह हर संगणक के द्वारा घर घर पहुंच रहे है।

आज वैश्विकरण के कारण संपूर्ण विश्व एक छोटा-सा कसबा बन गया है। जहॉ एक सी संस्कृति रीती रिवाज होती है। संपूर्ण विश्व में आपसी सहयोग व्यापार और संस्कृतिक आदान प्रदान का बडी तेजी से विकास हो रहा है। यह विश्व रुपी कसब तरह–तरह की भाषाओं एवं बोलियों का महासमुद्र है और अनुवाद इनके बीच सेतू का काम कर रहा है। विश्व स्तर पर अपनी उपल्ब्धियाँ दर्शाने के लिए भी अनुवाद सर्वोत्तम माध्यम है।

विश्व में ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की क्रांति में सर्व प्रथम कंप्युटर मनुष्य का महत्वपूर्ण सहयोगी बनकर उभरा है। कंप्युटर और इंटरनेट ने हर क्षेत्र में मनुष्य का काम सरल कर दिया है। आज विश्व की लगभग सभी महत्वपूर्ण भाषाओं के बीच परस्पर मशीनी अनुवाद संभव हो गया है।

बीज शब्द :- विषय विवरण, मल्टी-मीडिया, इंटरनेट और मीडीया, इंटरंनेट की चुनौतियाँ, इंटरनेट और हिंदी, निष्कर्ष।

विषय विवरण :-

अक्सर मशिनी अनुवाद प्रणालियों द्वारा प्रजनित संयुक्त एवं मिश्र वाक्य हिंदी की प्रकृति के अनुसार नहीं आ पाते है। अनुवाद प्रणाली द्वारा अनुवाद होने पर अक्सर शब्दों के प्रसंगानुकूल अर्थ न आकर सर्वाधिक प्रचलित

अर्थ आ जाता है। कुछ शब्द ऐसे होते है जिनका कोई अर्थ उपलब्ध न होने पर कंप्युटर उसे अंग्रेजी में ज्यों का त्यों ले लेता है । सबसे बडी समस्या अनुवाद के क्षेत्र में मुहावरों और लोकोक्तियों को पहचानने की है । बहुअर्थाय वाक्यों और शब्दों के अनुवाद में भी समस्या रहती है।

सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद के लिए मशीनी अनुवाद की उपादेयता पर यदि विचार किया जाए तो, यह कहा जा सकता है कि, कंप्युटर में सृजनशीलता का नितांत अभाव होता है। इसिलिए साहित्य के क्षेत्र में मशीनी अनुवाद की संकल्पना की जाये तो उसकी सिद्दि उतनी सरल नहीं लगती। उदा: के लिए सृजनात्मक साहित्य में व्यंजनात्मक और लाक्षणिक प्रयोग होते है, काव्यशास्त्र तथा अनेक प्रकार के मिथकों के प्रयोग होते है । तरह तरह के बिम्ब और प्रतीक होते है, मुहावरे और लोकोक्तियाँ होती है, क्षेत्र विशेष या जाति विशेष की सांस्कृतिक विशेषताएँ होती है, जिनका अनुवाद के लिए भी कठिन है, मशीनी अनुवाद संभव ही नहीं।

पत्रकारिता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक क्षेत्र है । इसमें साहित्यिक विषयों के साथ-साथ अधुनिक विषय जैसे राजनीति, खेल-कूद, फिल्म, बाजार, समाचार, विज्ञापन जैसे विषय भी समाहित है, हिंदी में पत्रकारिता का जो स्वरूप निर्धारित हुआ है उसमें अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मल्टीमीडिया – ईंटरनेट आज एक सर्वव्यापी सत्ता के रूप में स्थापित हो चुका है । यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी सैन्य –सामग्री को प्रयोग किए बिना संसार को जीता जा सकता है । है । इंटरनेट के द्वारा सूचना तंत्र मानव की मूठी में बंद होता जा रहा है । इलेक्ट्रानिक संचार युग का यह सर्वाधिक विस्मयकारी, सक्षम और तीव्र सुचना –संवाहक समग्र समाज को बदलने में प्राणपण से जूटा है । इसीलिए दूरदर्शन को बूध्दु बक्सा कहा गया है और एक नशा माना गया है। इंटरनेट इससे भी अधिक नशीला, मादक और प्रभावशाली है। वह आमृत भी पिलाता है और विष भी पिने मजबूर करता है।

गिरीश्वर मिश्र के अनुसार, "इंटरनेट ने लोगों को वह सामर्थ्य प्रदान की है कि वे स्वयं इस दुनिया में अपने लिए बोलें । वस्तुत: इंटरनेट ने सूचना और विषयवस्तु के साथ एक सर्जनात्मक संबंध की दिशा दिखाई है । इसके पूर्ववर्ती जंनसंचार-माध्यम मात्र विषयवस्तु या सुचना देते थे, निष्क्रिय और संवादहीन । इंटरनेट व्यक्ति को उसकी सीधी भागीदारी का सशक्त माध्यम उपलब्ध कराता है।"

इंटरनेट का जन्म के लगभग दस वर्ष पश्चात अर्थात 1979 में एक शैक्षिक नेटवर्क यूजनेट –न्युज के रूप में इसका पहला सार्वजनिक विस्तार हुआ। लेकिन वह भी सरकारी नियंत्रण के अधीन ही हुआ। आठवे दशक के उत्तरार्ध में अमेरीकी सरकार ने 'नँशनल साइंस फाउंडेशन' के द्वारा पाँच सुपर कंम्प्युटर केंद्रो की स्थापना की जो इंटरनेट के प्रमुख संयोजक बिंदु बने और इनके द्वारा कई विश्वविद्यालयों और अनुसंधान प्रयोगशालओं को परस्पर जोडा

गया। इस समय इंटरनेट पर समग्र विश्व में लगभग 10 लाख वेबसाइट अपने आप में एक नेटवर्क है और ये सभी साइट किसी माध्यम से परस्पर संबध्द हैं।

15 अगस्त, 1995 को विदेश संचार निगम लिमिटेड ने गेटवे इंटरनेट एक्सेस सर्विस (जी.आई.ए.एस) की स्थापना वाणिजिक रूप में की। इसने अमेरिका' जापान, इटली आदि देशों की इंटरनेट कंपनियों से समझौता करके देश के प्रमुख शहरों में इंटरंनेट की सुविधाएँ उपलब्ध करवानी आरंभ की।

इस समय भारत में तीन सरकारी एजेंनसियाँ इंटरनेट की सूविधाएँ उपलब्ध कराने का काम कर रही हैं। 1) दूरसंचार विभाग 2) महानगर टेलीकॉम निगम लिमिटेड तथा 3) विदेश संचार निगम लिमिटेड। इंटरनेट का प्रमुख कार्य है सुचनाओं का आदान प्रदान। इंटरनेट इस ब्रम्हांड में उपस्थित लगभग सभी विषयों पर जानकारी समेटे है।

इंटरनेट और मीडिया:- -संचार माध्यम के क्षेत्र में क्रांति ही ला दी है। इसने समाचार पत्रों के प्रसार प्रचार पर प्रभाव तो अवश्य डाला है फिर भी उनके महत्व को कम नही कर सका है। आजकल पत्रकारिता और इंटरनेट दोनों परस्पर पूरक बन गए हैं। फैक्स और तेलिफोन की अपेक्षा इंटरनेट ने पत्रकारिता को अत्यधिक तीव्रता प्रदान की है। इंटरनेट आज पत्रकारों को वह सामग्री भी उपलब्ध करवा रहा है जिसकी कल्पना तक पत्रकारों को नही थी। समय की बचत और अनुवाद करने में सुविधा इंटरनेट की अत्यधिक महत्वपूर्ण देन है। बहुभाषीय ऑनलाइन वार्ता और सुपर टेक साफ्ट्वेयर निर्मित होने से हिंदी पत्रकारिता में सरलता से कार्य करना संभव हो गया है। कंप्युटर और ईंटरनेट के अविष्कार से पहले अधिकांश पत्रकारों को अपने दिन प्रतिदिन के समाचारों की पृष्ठभूमि लिखने के लिए मुख्य रूप से अपनी स्मरण शक्ति पर निर्भर रहना पडता था। आप इंटरनेट पर सब कुछ खरीददारी करना भौतिक संसार में जो करते हैं। आप इंटरनेट पर किताबें, अखबार आदि पढ सकते हैं। पर्यटन का आनंद ले सकते हैं, अश्शलील साईट देख सकते हैं, संदेश भेज और मँगा सकते हैं, हजारों किलोमीटर दूर बैठे लोगों से वार्तालाप कर सकते हैं रेडियो सुन सकते हो, टी.व्ही. देख़ सकते हैं ऐसे हजारों काम कर सकते हैं।

इंटरनेट की चुनौतियाँ भारत के दुरदराज के गाँव में बैठा छात्र भी अमेरिका के डीजीटल पुस्तकालय में आयी नवीनतम पुस्तक बडी आसानी से अपने कम्प्युटर पर डाउनलोड करके पढ सकेगा।

इंटरनेट से प्राप्त सुविधाओं को निम्न बिंदुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता हैं।

1) ई-मेल की सुविधा। एक अनुमान के अनुसार आज विश्व में लगभग पचास करोड लोगों के पते इंटरनेट पर हैं जिनसें ई-मेल के माध्यम से पत्राचार आदि किया जा सकता हैं।
2) विश्व के लाखों कम्प्यूटरों पर संग्रहीत विषयों से संबंधित जानकारियों तथा सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता हैं।

3) हजारों मील दूर के कम्प्यूटरों से सैकडों पृष्ठों की सामग्री अपने पास मीनटों में मँगाई अथवा भेजी जा सकती हैं।
4) दूरस्थ स्थानों के कार्यक्रमों के चित्रों, ध्वनिओं, एनिमेशन आदि की फाइलों को मँगाकर अपने कमप्युटर पर देख़ा और सुना जा सकता है।
5) इलेक्ट्रानिक प्रकाशनों को पढा और पढाया जा सकता है। इस प्रकार इंटरनेट के वेबसईट में आप समय समय पर जानकारी एकत्रित करते रहेंगे । इस सारी सुचनाओं का अदान प्रदान एच. टी.एम.एल. भाषा(हाइपर टेक्स्ट मार्क अप लैंगवेज) में होता है।

इंटरनेट और हिंदी :- इंटरनेट का विकास और स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय विकास अकादमी द्वारा सन 1990 में किया गया। वस्तुत: इसका जन्म सन 1969 में हुआ माना जाना चाहिए। दो या अधिक कंम्प्युटरों के बीच संवाद किस तरह स्थापित हो ? इस अभिकल्पना और संचार के मुल में उद्देश था। स्कुल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों, राज्य सरकारों, इंटलैक्चुअल सोसाइटीज, व्यावसायिक संगठनों, वाणिज्यिक फर्मों तथा मिलिटरी कंटोन्मेंट बेस आदि को आपस में जोडना, ताकि परस्पर गतिविधियों और सुचनाओं का आदान-प्रदान होता रहे।

डॉ.एच.बालसुब्रह्मण्यम के शब्दों में 'हरि अनंत हरि कथा अनंता' की तरह ब्रम्हाण्ड से जुडा यह इलेक्ट्रानिक पिंड आपका हर काम कर देता है। एक ऐसा गुलाम जो आपकी गलतियोँ की ओर भी संकेत देते हुए सही रास्ता सुझा सकता है"।

इंटरनेट के उपयोग के मुख्य क्षेत्र पांच है –

1)ई-मेल 2) बातचीत गपशप (चैटींग) 3) ई-बैकिंग 4) ई-कॉमर्स 5) ई-प्रशासन

इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के आगमन का पहला अवसर हिंदी पोर्टल वेब दुनिया को मिला विश्व की पहली वेबसाइट 'नई दुनिया कॉम पहली बहुभाषी ई-मेल सेवा 'ई-पत्र' और पहला हिंदी पोर्टल 'वेब दुनिया कॉम' इंटरनेट पर लाया गया, तब उम्मीद नही थी कि इसकाइतना स्वागत होगा।

वर्तमान में भारतमें लगभग 46 लाख लोग इंटरनेटका प्रयोग कर रहे है। यह संख्या लगातार बढ रही है। आनेवाले वर्षों में यह आँकडा 75 लाख और सन 2001 तक साढे बीस करोड से भी अधिक हो जाने का अनुमान है।

निष्कर्ष:- निष्कर्षत: यही कहा जाता है कि कम्प्युटर एक ऐसा यंत्र है जो मनुष्य के मस्तिष्क के समान कार्य करता है। परंतु यह मनुष्य के मस्तिष्क से कई गुना अधिक तेज है। इंटरनेट आज एक सर्वव्यापी सत्ता के रूप में स्थापित हो चुका है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा सैन्य सामग्री को प्रयोग किए बिना विश्व को जीता जा सकता है। इंटरनेट के बारे मे गिरीश्वर मिश्र के अनुसार इंटरनेट के लोगों को वह सामर्थ्य प्रदान की है। इंटरनेट के जन्म के लगभग दस वर्ष पश्चात अर्थात 1979 में एक शैक्षिक नेटवर्क युजनेट न्युज के रूप में इसका पहला सार्वजनिक विस्तार हुआ। युनिकाइड मीडीया टेक्नालोजी के नाम से निर्मित इस तकनीक के माध्यम से

भारत सहीत दुनिया के 67 देशों के ग्राहकों को यह सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इंटरनेट की सेवा प्राप्त करने के लिए इंटरनेट का पंजीकृत कनेक्शन होना आवश्यक है। इंटरनेट का विकास और स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय विकास अकादमी द्वारा सन 1990 में किया गया। स्कुल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों, राज्य सरकारों, इंटलॉक्चुअल सोसाइटीज, व्यावसायिक संगठनों, वाणिज्यिक कर्मों तथा मिलिट्री कंन्टोन्मेंट बेस आदि के सुचनाओं का आदान-प्रदान होता रहे। सूचना, ऑकडे, दस्तावेज, पत्रावलियों आदि के लिए एक ही जगह कुछ कंम्प्युटर को एक दुसरे के साथ जोडना इंटरनेट कहलाता है। इंटरनेट पर अंग्रेजी का ही वर्चस्व है, लेकिन अन्य भाषाएँ भी पीछे नहीं है। आज जब जापान ,चीन, थाईलैंड जैसे देश अपनी भाषा और लिपि में बिना किसी रूकावट के काम कर सकते है। इस तरह इंटरनेट मल्टी मीडीया का प्रयोग हिंदी वर्तमान स्थिति का उल्लेख़ किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सुची :

1) मीडीया लेखन
-डॉ. गंगा सहाय प्रेमी
2) कम्प्युटर शिक्षा
डॉ. प्रज्ञा श्रीवास्तव
3) कंप्युटर विज्ञान विश्व कोश, नितिन गोयल

****